P.G. Sem-3
CC-12, UNIT-1
AND U.G-3, PAPER-VIII
GROUP-A (USA)

THE AMERICAN CIVIL WAR

Page No.:
Date:
YOUVA

अमेरिकी गृहयुद्ध के कारणों का परीक्षण करते हुए अब्राहम लिंकन की भूमिका स्पष्ट करें।

अमेरिकी गृहयुद्ध अमेरिका के इतिहास में मील का पत्थर माना गया है। इसके पश्चात् समस्त अमेरिका में स्वतंत्रता एवं समानता का सिद्धांत समान रूप से लागू किया गया। संघीय शक्तियाँ देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफल रही। यह गृहयुद्ध अमेरिका के दो अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों – उत्तरी एवं दक्षिणी में विकसित हो रहे दो भिन्न एवं परस्पर विरोधी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक हितों का प्रतिफलन था जो 1861-1865 के मध्य चार वर्षों तक चला।

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका का क्षेत्रीय विस्तार अत्यधिक होने की वजह से उत्तरी एवं दक्षिणी दोनों क्षेत्रों के आर्थिक हित एक दूसरे से भिन्न एवं परस्पर विरोधी हो गये थे। उत्तरी राज्यों में उद्योगों की प्रधानता थी। उद्योगों में सूती, ऊनी वस्त्र, चमड़े के सामान आदि वस्तुएँ बड़े पैमाने पर उत्पादित होती थी। इन कारखानों में मजदूरों द्वारा मशीन से उत्पादन होता था अतः यहाँ गुलामों एवं दासों का विशेष महत्व न था। उत्तरी राज्य इंग्लैंड के माल की प्रतियोगिता से अपनी रक्षा के लिए संरक्षण की माँग करते थे। वे चुंगी की उच्च दर बढ़ाकर अपने औद्योगिक बाजार को सुरक्षित कर लेना चाहते थे। पश्चिमी क्षेत्रों में बैंदे लोगों का वर्चस्व था जो कृषि एवं पशुपालन का धंधा करते थे इसीलिए उत्तरी क्षेत्र के निवासी को अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए सस्ती दर पर जमीन उन्हें यही उपलब्ध हो सकती थी।

दूसरी ओर अमेरिका के दक्षिणी राज्यों का आर्थिक जीवन कृषि पर आधारित था और कृषि में यंत्रों का प्रयोग न के बराबर था। अतः इन राज्यों के किसान कृषि कार्य हेतु गुलामों के श्रम पर निर्भर थे। दक्षिण में कपास, गन्ना एवं तम्बाकू की खेती बड़े पैमाने पर होती थी जिनमें दास मजदूर के रूप में कार्य करते थे। अतः दक्षिण का समाज पूर्ण रूप से दासों पर निर्भर था। यहाँ उद्योग-धंधों का विकास न के बराबर था। दक्षिणी राज्यों के लिए दास-प्रथा जारी रखना उनकी अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त था। उत्तरी राज्य इस अमानवीय प्रथा को खत्म चाहते थे ताकि उन्हें उद्योगों के लिए सस्ते मजदूर उपलब्ध हो सके। यद्यपि

Scanned with CamScanner

इंग्लैंड के उपनिवेशों में 1833 में, फ्रांसीसी उपनिवेशों में 1848 में लैटिन अमेरिकी गणतंत्रों में सदी के पूर्वार्द्ध में इस प्रथा पर रोक लगा दी गई थी। दक्षिणी राज्य इसे अभी भी कायम रखना चाहते थे। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के कारण दक्षिणी निवासी सस्ती से सस्ती दरों पर उपभोक्ता सामग्री खरीदना चाहते थे इसीलिए उन्होंने उच्च सीमा शुल्क दर का विरोध किया। वे उन्मुक्त या अनियंत्रित व्यापार एवं इंग्लैंड के साथ घनिष्ठतम संबंध बनाये रखने के समर्थक थे। पश्चिमी ओर स्थानांतरण दक्षिणी राज्यों के लिए भी लाभप्रद था क्योंकि कृषि योग्य भूमि वहीं उपलब्ध थी।

इसप्रकार उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्र के आर्थिक हित अलग-2 एवं परस्पर विरोधी थे। विवाद उस समय बढ़ जाता जब कोई नया राज्य संघ की सदस्यता हेतु आवेदन देता था। हरबार दक्षिणी राज्य नये राज्य को अपने हितों के मद्देनजर एक गुलाम राज्य के रूप में शामिल करना चाहता था जबकि उत्तरी राज्य चाहता था कि नया राज्य एक दासमुक्त राज्य के रूप में उसकी ओर शामिल हो जाये। दरअसल दास-प्रथा को अमेरिकी संविधान ने भी मान्यता प्रदान कर रखी थी। इसके चलते दक्षिणी राज्यों को इसके पक्ष में एक प्रकार से कानूनी बल प्राप्त था जबकि उत्तरी राज्य इस प्रावधान की घोर निंदा करते थे तथा इसका खात्मा चाहते थे जो कि तत्कालीन परिस्थितियों में संभव प्रतीत नहीं दिख रहा था क्योंकि दक्षिणी राज्य इसे राजनीतिक अधिकार का हनन एवं सम्प्रभुता पर हमले से जोड़कर देख रहे थे। 1820 में दोनों राज्यों के मध्य एक समझौता द्वारा तय हुआ कि पश्चिम की ओर प्रसार में प्रत्येक जीते गये राज्य में एक में गुलाम प्रथा को समर्थन दिया जायेगा तो दूसरे में नहीं। इसी बीच कैलिफोर्निया में गुलाम प्रथा समाप्ति की घोषणा कर दी गयी। इस राज्य के संघ में विलय से असंतुलन पैदा हो गया। इस समस्या का समाधान इस रूप में हुआ कि दक्षिण के सबसे राज्यों को उत्तरी राज्य पुनः दक्षिण को सौंप देंगे। यह कृत्य उत्तरी राज्यों को असंवैधानिक प्रतीत होने लगा। तीस के दशक में उत्तरी क्षेत्र का दास प्रथा उन्मूलन आंदोलन अपने उफान पर था।

इन घटनाओं ने उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्रों के मतभेदों को और भी बढ़ा दिया जिससे गृहयुद्ध होना आवश्यंभावी हो गया। विवाद ने उस समय एक नया मोड़ लिया जब 1860 में नवगठित

रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य 'अब्राहम लिंकन' राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल की। लिंकन की जीत वस्तुतः उत्तरी क्षेत्र की जीत थी क्योंकि इस पार्टी के उग्रवादी सदस्य दक्षिणी राज्यों के भावनाओं के घोर विरोधी थे। दक्षिणी राज्यों द्वारा यह सोचा जाने लगा कि लिंकन अपनी नीतियों द्वारा उनके आर्थिक हितों को क्षति पहुँचायेंगे। रिपब्लिकन पार्टी के जीत का जवाब दक्षिणी राज्यों ने संघ से पृथक होकर दिया। 1861 में दक्षिणी कैरोलिना के नेतृत्व में अल्बामा, फ्लोरिडा, मिसीसिपी, लुइसियाना, टेक्सास तथा जार्जिया ने पृथक होने की घोषणा कर दी तथा 'जेफरसन डेविस' की अध्यक्षता में एक नये 'कानफेडरेट स्टेट्स ऑफ अमेरिका' नामक संयुक्त संघ की स्थापना की तथा एक नये झंडे का प्रयोग किया। उन्होंने यह तर्क दिया कि अमेरिकी संविधान के अनुसार राज्यों को संघ से पृथक होने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। राष्ट्रपति लिंकन ने दक्षिणी राज्यों की स्वतन्त्रता की घोषणा को अवैध घोषित कर दिया। इसके प्रत्युत्तर में 12 अप्रैल 1861 को दक्षिणी कैरोलिना के सैनिकों द्वारा संघ के शस्त्रागार पर बमबाजी करके गृहयुद्ध की औपचारिक शुरुआत कर दी जो 1865 तक निरंतर चलता रहा। यह 19वीं सदी का सबसे भयानक युद्ध था। संघ की ओर से उत्तरी तथा पश्चिमी राज्यों के लगभग 2 करोड़ लोग थे जबकि दक्षिणी महासंघ की ओर से मात्र 55 लाख, किंतु इसके पास अधिक कुशल सेनापति, दुस्साहसिक योद्धा तथा जबरदस्त मनोबल था। इसके बावजूद गृहयुद्ध में दक्षिणी महासंघ की पराजय हुई। 14 अप्रैल 1865 को दक्षिणी महासंघ के सैन्य प्रधान 'रार्बटली' ने आत्मसमर्पण कर दिया। संघीय सेना ने सैन्य कारवाई कर दक्षिणी महासंघ का पुनः विलय कर दिया। 1 जनवरी 1863 को ऐतिहासिक घोषणा के अन्तर्गत राष्ट्रपति लिंकन ने सभी विद्रोही राज्यों में दास-प्रथा उन्मूलन की घोषणा की।

लिंकन वस्तुतः दास प्रथा उन्मूलन से अधिक पृथकतावादी आंदोलन को कुचलना चाहते थे। राष्ट्रपति पद पर निर्वाचन के पश्चात् ही उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी थी कि संयुक्त राज्य अमेरिका के रूप में जो संघ स्थापित किया गया था वह अखंडनीय एवं शाश्वत है, उसकी अखंडनीयता को किसी प्रकार नष्ट नहीं होने दिया जायेगा। लिंकन ने घोषणा की कि "अगर हम सभी दासों को मुक्त कर संघ को बचा सके तो हम ऐसा

करेंगे। अगर हम दासों को मुक्त किये बिना संघ को बचा सके तो हम ऐसा करेंगे और अगर कुछ दासों को मुक्त कर तथा कुछ अन्य को मुक्त नहीं करके संघ को बचा सके तो हम वह भी करेंगे। वस्तुतः उनके लिए यह गृहयुद्ध नैतिक कम सामरिक अधिक था। दास प्रथा उन्मूलन को उन्होंने अपनी रणनीति में शामिल किया जिससे उदारवादी राज्यों की ताकतों का लाभ एवं सहानुभूति मिल सके। यूरोपीय राज्य इसके दो तरह से जुड़े थे। वे नैतिकता के नाम पर दास-प्रथा का उन्मूलन तो चाहते ही थे साथ ही उनकी आबादी भी उत्तरी राज्यों में बसती थी।

गृहयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् संविधान में संशोधन कर यह स्पष्ट कर दिया गया कि संयुक्त राज्य अमेरिका एक राष्ट्रीय राज्य था, उसके अंगीभूत राज्य उसकी सम्बद्ध इकाइयां थे, उनकी अपनी पृथक सम्प्रभुता नहीं थी। संशोधन द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया कि कोई राज्य किसी व्यक्ति को उसके जीवन, स्वतंत्रता या सम्पत्ति से कानूनी प्रक्रिया के बिना वंचित नहीं कर सकता एवं ऐसी कानूनी प्रक्रिया संघ की सरकार तय करेगी।

जिस प्रकार से केन्द्रीय सरकार की शक्ति का इस्तेमाल दास प्रथा के उन्मूलन में कुछ खास लोगों की व्यक्तिगत सम्पत्ति समाप्त करने में हुआ वह तत्कालीन विश्व में बेमिसाल था। अमेरिका में दास-मालिकों को कोई मुआवजा भी नहीं दिया गया। दक्षिणी राज्यों का कुलीन वर्ग नष्ट हो गया। अप्रैल 1865 में एक दक्षिणी आतंकी ने राष्ट्रपति लिंकन की हत्या कर दी।

इस प्रकार अमेरिकी गृहयुद्ध ने देश को छोटे-छोटे स्पर्धी खंडों में विभाजित करने के बदले U.S.A. को विशाल राष्ट्र राज्य के रूप में परिणत कर दिया। U.S.A. अब राजनीति में 'उदार लोकतंत्र' तथा अर्थव्यवस्था में निजी व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र बन गया।

—X—

Scanned with CamScanner